माना कि कलयुग का अन्धेरा घना है,
पर अधर्म की पूजा करना तो मना है।

साई के शिष्य श्री गोविन्दराव रघुनाथ दाभोलकर (हेमाड़पन्त) द्वारा लिखित
व श्री साई बाबा विश्वस्त, शिरडी, द्वारा प्रकाशित।

श्री साई सत्चरित्र के मुख्य बिन्दुः–

अध्याय 5	:	शिरडी में एक पहलवान था, जिसका नाम मोहिंदीन तम्बोली था, बाबा का उससे किसी विषय पर मतभेद हो गया। फलस्वरूप दोनों में कुश्ती हुई और बाबा हार गये।
अध्याय 5	:	साई "अल्लाह मालिक" का सदा उच्चारण किया करते थे।
अध्याय 10	:	(साई) "न्याय अथवा मीमांसा या दर्शन शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।"
अध्याय 13	:	(साई) "कोई कितना भी दुःखी और पीड़ित क्यों न हों, जैसे ही वह मस्जिद की सीढ़ियों पर पैर रखता है, वह सुःखी हो जाता है।"
अध्याय 14	:	दक्षिणा मीमांसा के अनुसार साई बीड़ी/ तम्बाकू पीते थे ।
अध्याय 23	:	मस्जिद में एक अत्यन्त दुर्बल बूढ़ा और मरने वाला बकरा लाया गया। लेकिन जैसे ही बाबा ने काका से कहा कि मैं स्वयं ही काटूंगा, बकरा गिर कर मर गया।
अध्याय 23	:	गुरू भक्ति (साई) "श्वासोच्छवास (प्रणायाम) नियंत्रण, हठयोग या अन्य कठिन साधनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। "
अध्याय 18–19	:	(साई) "इस मस्जिद में बैठकर मैं सत्य ही बोलूंगा कि किन्हीं साधनाओं या शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं।"
अध्याय 22	:	(साई) "यह मस्जिदमाई परम् दयालू है। सरल हृदय भक्तों की तो यह माँ है और संकटो में उनकी रक्षा अवश्य करेगी। जो कोई इसकी छत्र छाया में विश्राम करता है, उसे आनंद और सुःख की प्राप्ति होती है।"
अध्याय 28	:	कुदृष्टि के अनुसार चावड़ी का जुलूस देखने के दिन बाबा कफ से अधिक पीड़ित थे।
अध्याय 28	:	साई मेघा की ओर देखकर कहने लगे, "तुम तो एक उच्च–कुलीन ब्राह्मण हो और मैं बस निम्न जाति का यवन (मुसलमान)"
अध्याय 38	:	मांसाहारी प्रसाद, मस्जिद से बर्तन मंगवाकर मौलवी के फातिहा पढ़ाकर हांडी में से लोगों को दिया जाता था।
अध्याय 43/44	:	72 घण्टे के अनुसार साई सन् 1886 में मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन बाबा को दमा से अधिक पीड़ा हुई।

विस्तृत विवरण के लिए श्री साई सत्चरित्र पढ़ें।
साई के नाम पर मन्दिरों का इस्लामीकरण बन्द हो।

पूजा चित्र की नहीं, चित्र के चरित्र की होती है।

साई के शिष्य श्री गोविन्दराव रघुनाथ दाभोलकर (हेमाड़पन्त) द्वारा लिखित
व श्री साई बाबा विश्वस्त, शिरडी, द्वारा प्रकाशित।

श्री साई सत्चरित्र के मुख्य बिन्दुः-

		अध्याय 6, 10, 23, और 41 के अनुसार साई जब गुस्से में आते थे, तब वह गाली और अपशब्द बोलते थे, अधिक गुस्से में तो कई पिटे।
अध्याय 6	:	मस्जिद का जीर्णोद्धार : दिन-रात परिश्रम कर भक्तों ने लोहे के खम्भे गाड़े । जब दूसरे दिन चावड़ी ने बाबा लौटे, उन्होंने उन खम्भों को उखाड़ कर फेंक दिये और अति क्रोधित हो गये। वे एक हाथ से खम्भा पकड़कर उसे उखाड़ने लगे और दूसरे हाथ से उन्होनें तात्या का साफा उतार दिया और उसमे आग लगाकर गड्ढे में फेंक दिया। बाबा के नेत्र जलते हुए अंगारे के सदृश्य लाल हो गये...भागोजी शिंदे (बाबा के एक कोढ़ी भक्त) कुछ साहस कर आगे बढ़े, पर बाबा ने उसकी वही दशा की...अनायास ही बिना किसी गोचर कारण के वे क्रोधित हो जाया करते थे। ऐसी अनेक घटनायें देखने में आ चुकी हैं, परन्तु मैं इसका निर्णय नहीं कर सकता कि उनमें से कौन सी लिखूँ और कौन सी छोड़ूँ।
अध्याय 6	:	जिस समय गुलाब की वर्षा हो रही थी, तो उसके कुछ कण अनायास ही बाबा की आँख में चले गये, तब बाबा एकदम क्रुद्ध होकर उच्च-स्वर में अपशब्द कहने व कोसने लगे। यह दृश्य देखकर सब लोग भयभीत होकर सिटपिटाने लगे।
अध्याय 10	:	बाबा... कभी पत्थर मारते, कभी गालियां देते।
अध्याय 10	:	(साई) "न्याय अथवा मीमांसा या दर्शन शास्त्र पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।"
अध्याय 23	:	....श्यामा मस्जिद की ओर दौड़ा, अपने विठोबा श्री साईनाथ के पास, जब बाबा ने उन्हें दूर से आते देखा तो वे झिड़कने लगे और गाली देने लगे।
अध्याय 23	:	(बाबा) " श्वासोच्छ्वास (प्राणायाम) नियंत्रण, हठयोग या अन्य कठिन साधनाओं की कोई आवश्यकता नहीं है। "
अध्याय 28	:	..."गंगा स्नान मुझे इस झंझट से दूर ही रहने दो। मैं तो फकीर (मुसलमान) हूँ"
अध्याय 32	:	...बाबा ने स्वयं कभी भी उपवास नहीं किया, ना ही उन्होंने दूसरों को करने दिया।
अध्याय 38	:	...एक एकादशी के दिन उन्होंने केलकर को कुछ रूपये देकर कुछ मांस खरीदकर लाने को कहा।
		(बाबा ने एक ब्राह्मण को बलपूर्वक बिरयानी का स्वाद चखने को मजबूर किया)
अध्याय 38	:	...ऐसे ही एक अन्य अवसर पर उन्होंने दादा से कहा, "देखो तो नमकीन बिरयानी पुलाव कैसा पका है?" दादा ने यूँ ही कह दिया कि अच्छा है। तब वे कहने लगे की तुमने ना अपनी आँखों से देखा और न ही जिह्वा से स्वाद लिया, फिर तुमने यह कैसे कह दिया कि उत्तम बना है? थोड़ा ढक्कन हटाकर देखो। बाबा ने दादा की बांह पकड़ी और बलपूर्वक बर्तन में डालकर बोले, "थोड़ा इसमें से निकालो और अपना कट्टरपन छोड़कर चखकर देखो।"
अध्याय 41	:	(साई) "इतने वृद्ध होकर भी तुम यहाँ चोरी करने को आये हो?" इसके पश्चात बाबा आपे से बाहर हो गये और उनकी आँखें क्रोध के कारण लाल हो गयीं। वे बुरी तरह से गालियाँ देने और डाँटनें लगे। शान्तिपूर्वक वे सब सुनते रहे। वे मार पड़ने की भी आशंका कर रहे थे।

पूर्ण विवरण के लिए श्री साई सत्चरित्र पढ़ें।
सनातन धर्म का इस्लामीकरण बन्द हो।